31 सूरए लुक़मान

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 1: अलिफ़ लाम मीम

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   "अलिफ़ लाम मीम" एक रहस्यमयी वाक्यांश है जिसका कोई स्पष्ट अर्थ नहीं बताया गया।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन में प्रमाण (ज्ञान का स्रोत) चार प्रकार के होते हैं: प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द। यह आयत न तो प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा समझी जा सकती है, न ही अनुमान, उपमान या शब्द प्रमाण द्वारा इसका कोई अर्थ स्पष्ट होता है। बिना प्रमाण के किसी भी कथन को तर्कसंगत नहीं माना जा सकता।

3. **उदाहरण (Example):**
   वैदिक शास्त्रों में भी कई मंत्र प्रतीकात्मक होते हैं, लेकिन उनके अर्थ और संदर्भ स्पष्ट होते हैं। जैसे, "ॐ" का अर्थ विस्तृत रूप से वेदों और उपनिषदों में समझाया गया है। लेकिन "अलिफ़ लाम मीम" का कोई स्पष्ट व्याख्या नहीं दी गई है।

4. **उपनय (Application):**
   एक ग्रंथ का प्रारंभिक वाक्य ही अस्पष्ट हो, तो वह तर्कसंगत ज्ञान का स्रोत नहीं हो सकता। यदि कोई पुस्तक खुद को "हिकमत (बुद्धिमत्ता) से भरी हुई" कहे, लेकिन उसकी पहली आयत का कोई अर्थ न हो, तो यह दावा संदेहास्पद हो जाता है।

5. **निगमन (Conclusion):**
   न्याय दर्शन के अनुसार, ज्ञान प्रमाण-सम्पन्न होना चाहिए। यह आयत न्याय दर्शन की प्रमाण व्यवस्था

को संतुष्ट नहीं करती और एक बुद्धिमान ग्रंथ का तर्कसंगत प्रारंभ नहीं हो सकता।

आयत 2: ये सूरा हिकमत से भरी हुई किताब की आयतें हैं

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि यह किताब हिकमत (ज्ञान) से भरी हुई है।

2. **हेतु (Reason):**
   कोई भी ग्रंथ तभी ज्ञानयुक्त माना जाता है जब उसमें सार्वभौमिक तर्क, प्रमाण और अनुभवजन्य सत्य हों। लेकिन कुरान में ऐसे कई कथन हैं जो न्याय दर्शन के प्रमाण तंत्र (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द) को संतुष्ट नहीं करते।

3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय ग्रंथ जैसे न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, और वेदांत में स्पष्ट प्रमाण दिए गए हैं कि ज्ञान सत्य, युक्ति और परीक्षण पर आधारित होता है। कुरान में कई कथन मात्र विश्वास पर आधारित होते हैं, जिनका कोई तार्किक विश्लेषण नहीं दिया गया।

4. **उपनय (Application):**
   यदि किसी ग्रंथ में ज्ञान हो, तो उसके सभी कथनों को तर्क की कसौटी पर खरा उतरना चाहिए। "हिकमत से भरी हुई किताब" होने का दावा तभी सार्थक होगा जब प्रत्येक आयत प्रमाणिक हो।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत अपने ही दावे का समर्थन नहीं कर सकती, क्योंकि कुरान में कई गैर-तार्किक कथन मिलते हैं। अतः इसे "हिकमत से भरी किताब" कहना बिना प्रमाण के किया गया दावा है।

आयत 3: जो (अज़सरतापा) उन लोगों के लिए हिदायत व रहमत है

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि कुरान सभी लोगों के लिए हिदायत (मार्गदर्शन) और रहमत (दयालुता) है।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी सार्वभौमिक सत्य को व्यापक रूप से सभी पर लागू होना चाहिए। लेकिन कुरान में कई आयतें हैं जो केवल मुसलमानों के लिए विशेष मार्गदर्शन प्रस्तुत करती हैं और गैर-मुसलमानों के प्रति कठोर भाषा का उपयोग करती हैं।

3. **उदाहरण (Example):**
   कुरान में गैर-मुसलमानों के लिए नकारात्मक संदर्भ मिलते हैं (जैसे, 9:29 जो गैर-मुसलमानों से जज़िया लेने की बात करती है)। यदि कोई ग्रंथ पूरी मानवता के लिए होता, तो वह सभी के लिए समान रूप से मार्गदर्शक और करुणामय होता।

4. **उपनय (Application):**
   केवल मुसलमानों के लिए मार्गदर्शन देना इस आयत के सार्वभौमिक दावे को कमजोर करता है।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत न्याय दर्शन की व्याप्ति (Vyapti) के सिद्धांत को नहीं मानती, क्योंकि यह सभी मानवता पर समान रूप से लागू नहीं होती।

आयत 4: जो पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं और ज़कात देते हैं और वही लोग आख़िरत का भी यक़ीन रखते हैं

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि जो लोग नमाज पढ़ते हैं और जकात देते हैं, वही सही मार्ग पर हैं।

2. **हेतु (Reason):**
 किसी भी व्यक्ति का धार्मिक अनुष्ठान करना नैतिकता और सत्यता का प्रमाण नहीं हो सकता। न्याय दर्शन में कर्म और युक्ति का महत्व है, न कि केवल अनुष्ठान।

3. **उदाहरण (Example):**
 भगवद गीता (2.47) कहती है कि व्यक्ति को कर्म करने का अधिकार है, लेकिन फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए। केवल कर्मकांड (जैसे नमाज) को ही सही मार्ग कहना अनुचित है।

4. **उपनय (Application):**
 केवल धार्मिक अनुष्ठान करने वालों को सही मानना और बाकी को गुमराह कहना एक संकीर्ण दृष्टिकोण को दर्शाता है।

5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय दर्शन के अनुमान (Anumana) **तत्व का उल्लंघन करती है क्योंकि यह बिना प्रमाण के निष्कर्ष निकालती है कि केवल धार्मिक अनुष्ठान करने वाले ही सही हैं।**

आयत 5: यही लोग अपने परवरदिगार की हिदायत पर आमिल हैं और यही लोग (क़यामत में) अपनी दिली मुरादें पाएँगे

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत कहती है कि जो लोग कुरान का पालन करते हैं, वे कयामत में सफल होंगे।

2. **हेतु (Reason):**
 न्याय दर्शन में उपमान (समानता) तर्क का उपयोग किया जाता है। लेकिन यह आयत अन्य धार्मिक विचारधाराओं से तुलना किए बिना ही दावा करती है कि केवल इस्लाम को मानने वाले ही सही होंगे।

3. **उदाहरण (Example):**
 वेदांत दर्शन कहता है कि मोक्ष केवल धार्मिक विश्वास से नहीं, बल्कि आत्मज्ञान और योग के

माध्यम से प्राप्त होता है।

4. **उपनय (Application):**
 यह आयत केवल इस्लाम के अनुयायियों के लिए आशा प्रस्तुत करती है, जबकि अन्य विचारधाराओं को दरकिनार कर देती है।

5. **निगमन (Conclusion):**
 न्याय दर्शन में उपमान (तुलना) के बिना कोई भी निष्कर्ष उचित नहीं माना जाता। यह आयत एकपक्षीय दावे को प्रस्तुत करती है, जो तर्कसंगत नहीं है।

सारणी: आयतों का तार्किक मूल्यांकन

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
1	प्रमाण	"अलिफ़ लाम मीम" का कोई स्पष्ट अर्थ नहीं है।
2	प्रमेय	बिना प्रमाण के "हिकमत से भरी किताब" होने का दावा।
3	व्याप्ति	यह हिदायत सभी मानवता पर लागू नहीं होती।
4	अनुमान	धार्मिक अनुष्ठान को ही सत्य मानना तर्कसंगत नहीं।
5	उपमान	अन्य दर्शनों की तुलना किए बिना निष्कर्ष निकाला गया।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कई तार्किक त्रुटियाँ पाई जाती हैं, जिससे यह सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार्य नहीं हो सकती।

न्याय दर्शन के आधार पर आयतों का तार्किक विश्लेषण एवं आलोचना

आयत 6: ”और लोगों में बाज़ (नज़र बिन हारिस) ऐसा है जो बेहूदा क़िस्से (कहानियाँ) ख़रीदता है ताकि बग़ैर समझे बूझे (लोगों को) ख़ुदा की (सीधी) राह से भड़का दे और आयातें ख़ुदा से मसख़रापन करे ऐसे ही लोगों के लिए बड़ा रुसवा करने वाला अज़ाब है।”

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu - Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि कुछ लोग ”बेहूदा कहानियाँ” खरीदते हैं और इससे लोगों को गुमराह करते हैं।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन में किसी भी तर्क को सही सिद्ध करने के लिए प्रमाण आवश्यक होता है। यहाँ ”बेहूदा कहानियों” का उल्लेख है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि कौन-सी कहानियाँ निरर्थक हैं और कौन-सी नहीं।

3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में महाभारत और पंचतंत्र जैसी कथाएँ हैं, जो नैतिक शिक्षा और तर्कपूर्ण दृष्टिकोण को बढ़ावा देती हैं। इनका उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ बौद्धिक विकास भी है।

4. **उपनय (Application):**
   यदि कोई कहानी ज्ञान और तर्क को बढ़ावा देती है, तो उसे ”गुमराह करने वाली” नहीं कहा जा सकता। यह आयत बिना प्रमाण के किसी भी गैर-धार्मिक साहित्य को गलत ठहराती है।

5. **निगमन (Conclusion):**
   बिना प्रमाण और स्पष्टता के किसी भी साहित्य को ”गुमराह करने वाला” कहना एक तर्कहीन और पक्षपाती दृष्टिकोण है। इस दृष्टि से, यह आयत न्याय दर्शन के हेतु सिद्धांत को अस्वीकार करती है।

आयत 7: ”और जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो शेखी के मारे मुँह फेरकर (इस तरह) चल देता है गोया उसने इन आयतों को सुना ही नहीं जैसे उसके दोनों कानों में ठेठी है तो (ऐ रसूल) तुम उसको दर्दनाक अज़ाब की (अभी से) खुशख़बरी दे दे।”

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana - Inference)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत कहती है कि जो लोग कुरान की आयतों को अनसुना करते हैं, उन्हें दर्दनाक अज़ाब मिलेगा।

2. **हेतु (Reason):**
 न्याय दर्शन में अनुमान (inference) **तभी मान्य होता है जब वह व्याप्ति (Vyapti - Universal Concomitance) के सिद्धांत पर आधारित हो। यहाँ, बिना प्रमाण के यह निष्कर्ष निकाला गया कि जो कुरान को नहीं मानते, वे अज़ाब** (दंड) **के पात्र होंगे।**

3. **उदाहरण (Example):**
 भगवद गीता (2.47) में कहा गया है कि व्यक्ति को अपने कर्म करने का अधिकार है, लेकिन उसके फल की चिंता नहीं करनी चाहिए। यहाँ कहीं भी किसी धार्मिक ग्रंथ को न मानने पर दंड की धमकी नहीं दी गई है।

4. **उपनय (Application):**
 केवल किसी ग्रंथ को अनसुना करने पर दंड की बात करना तर्कहीन और अन्यायपूर्ण है। किसी भी सिद्धांत को मानने या न मानने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय दर्शन के अनुमान सिद्धांत को अस्वीकार करती है क्योंकि यहाँ निष्कर्ष केवल धमकी के आधार पर दिया गया है, बिना किसी तार्किक व्याख्या के।

आयत 8-9: "बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए उनके लिए नेअमत के (हरे भरे बेहष्ती) बाग़ हैं कि यो उनमें हमेशा रहेंगे। यह ख़ुदा का पक्का वायदा है और वह तो (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana - Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए, वे स्वर्ग में रहेंगे।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी कथन को प्रमाणित करने के लिए प्रत्यक्ष अनुभव, अनुमान, उपमान, या शब्द प्रमाण आवश्यक है। लेकिन स्वर्ग और नरक की अवधारणा को किसी भी प्रत्यक्ष प्रमाण (Pratyaksha Pramana) द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता।

3. **उदाहरण (Example):**
   संख्या दर्शन में कहा गया है कि आत्मा का मोक्ष योग और ज्ञान द्वारा होता है, न कि किसी विशेष धार्मिक आस्था से।

4. **उपनय (Application):**
   केवल "ईमान लाना" या किसी विशेष आस्था को मानना नैतिकता का प्रमाण नहीं हो सकता। नैतिकता कर्म और विचारों पर आधारित होती है।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत को अस्वीकार करती है क्योंकि यह किसी भी प्रकार से प्रत्यक्ष प्रमाणित नहीं की जा सकती।

आयत 10: "तुम उन्हें देख रहे हो कि उसी ने बग़ैर सुतून के आसमानों को बना डाला और उसी ने ज़मीन पर (भारी भारी) पहाड़ों के लंगर डाल दिए कि (मुबादा) तुम्हें लेकर किसी तरफ जुम्बिश करे।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti - Universal Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि आसमान बिना स्तंभों के खड़ा है और पहाड़ जमीन को स्थिर रखने के लिए बनाए गए हैं।

2. **हेतु (Reason):**
 आधुनिक विज्ञान के अनुसार, पृथ्वी की स्थिरता पहाड़ों के कारण नहीं है, बल्कि गुरुत्वाकर्षण के कारण है।

3. **उदाहरण (Example):**
 वैशेषिक दर्शन में कहा गया है कि प्रकृति के सभी पदार्थ गुण (गुरुत्व, द्रव्य, गति) के नियमों का पालन करते हैं। पहाड़ स्थिरता के लिए नहीं बने, बल्कि वे पृथ्वी की भूगर्भीय हलचलों का परिणाम हैं।

4. **उपनय (Application):**
 यह दावा कि पहाड़ पृथ्वी को स्थिर रखने के लिए बनाए गए हैं, वैज्ञानिक दृष्टि से गलत है।

5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय दर्शन के व्याप्ति सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह बिना किसी वैज्ञानिक प्रमाण के पृथ्वी की स्थिरता का कारण पहाड़ों को बताती है।

सारणी: आयतों का तार्किक मूल्यांकन

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
6	हेत्वाभास	"बेहूदा कहानियों" की परिभाषा अस्पष्ट और पक्षपाती है।
7	अनुमान	बिना प्रमाण के अज़ाब की धमकी दी गई है।
8-9	प्रमाण	स्वर्ग-नरक का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है।
10	व्याप्ति	पहाड़ों के स्थिरता देने के दावे का वैज्ञानिक खंडन होता है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तार्किक त्रुटियाँ, अनिश्चित प्रमाण, और पक्षपातपूर्ण निष्कर्ष पाए गए, जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ये सार्वभौमिक सत्य पर आधारित नहीं हैं।

न्याय दर्शन के आधार पर आयतों का तार्किक विश्लेषण एवं आलोचना

आयत 11: "(ऐ रसूल उनसे कह दो कि) ये तो ख़ुदा की ख़िलक़त है कि (भला) तुम लोग मुझे दिखाओं तो कि जो (जो माबूद) ख़ुदा के सिवा तुमने बना रखे है उन्होंने क्या पैदा किया बल्कि सरकश लोग (कुफ़्फ़ार) सरीही गुमराही में (पड़े) हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana - Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत दावा करती है कि केवल अल्लाह ही सृष्टि का रचयिता है और अन्य पूज्य किसी भी वस्तु का निर्माण नहीं कर सकते।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी कथन को सिद्ध करने के लिए प्रमाण आवश्यक होता है। यहाँ यह दावा किया जा रहा है कि अन्य देवताओं ने कुछ भी नहीं बनाया, लेकिन इसका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण (Pratyaksha Pramana) नहीं दिया गया।

3. **उदाहरण (Example):**
   वैदिक साहित्य में ब्रह्मा को सृष्टि का निर्माता कहा गया है, विष्णु को पालनकर्ता और शिव को संहारक बताया गया है। यह सृष्टि का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो कि केवल एक ईश्वर की संकल्पना से अधिक विस्तृत है।

4. **उपनय (Application):**
   यदि हम किसी एक ईश्वर को सृष्टि का एकमात्र रचयिता मानते हैं, तो हमें इसके लिए स्पष्ट तर्क और प्रमाण प्रस्तुत करने होंगे। केवल किसी अन्य को "गुमराह" कहना एक तर्कहीन निष्कर्ष है।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत बिना प्रमाण के ही अन्य मतों को "गुमराह" कहकर नकार रही है। यह न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत के विरुद्ध है क्योंकि कोई भी दावा बिना प्रमाण के वैध नहीं माना जा सकता।

आयत 12: ”और यक़ीनन हमने लुक़मान को हिकमत अता की (और हुक्म दिया था कि) तुम ख़ुदा का शुक्र करो और जो ख़ुदा का शुक्र करेगा-वह अपने ही फायदे के लिए शुक्र करता है और जिसने नाशुक्री की तो (अपना बिगाड़ा) क्योंकी ख़ुदा तो (बहरहाल) बे परवाह (और) क़ाबिल हमदो सना है।”

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana - Inference)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि जो अल्लाह का शुक्र करता है, वह खुद के भले के लिए करता है, और जो शुक्र नहीं करता, वह खुद का ही नुकसान करता है।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन के अनुसार, अनुमान (अनुमान प्रमाण) तभी मान्य होता है जब उसके पीछे एक सार्वभौमिक सत्य (व्याप्ति) हो। लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि केवल ईश्वर का आभार प्रकट करने से ही किसी का भला होगा।

3. **उदाहरण (Example):**
   भगवद गीता (3.9) कहती है कि सभी कर्म यज्ञभाव से किए जाने चाहिए, न कि किसी एक विशिष्ट सत्ता के प्रति कृतज्ञता तक सीमित होने चाहिए। गीता में आभार की भावना को संपूर्ण प्रकृति और समाज के प्रति निर्देशित किया गया है।

4. **उपनय (Application):**
   यदि किसी व्यक्ति का भला केवल एक ईश्वर की स्तुति से ही होता, तो सभी अन्य दर्शन और आस्थाएँ असत्य सिद्‌ध होतीं। लेकिन भारतीय दर्शन स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि व्यक्ति के कर्म, ज्ञान और तपस्या ही उसके कल्याण का मूल कारण हैं।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत केवल अनुमान के आधार पर निष्कर्ष निकालती है और न्याय दर्शन के अनुमान सिद्‌धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यहाँ सार्वभौमिक व्याप्ति का अभाव है।

आयत 13: ”और (वह वक़्त याद करो) जब लुक़मान ने अपने बेटे से उसकी नसीहत करते हुए कहा ऐ बेटा (ख़बरदार कभी किसी को) ख़ुदा का शरीक न बनाना (क्योंकि) शिर्क यक़ीनी बड़ा सख़्त गुनाह है।”

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti - Universal Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि ईश्वर के साथ किसी और को पूजना सबसे बड़ा अपराध है।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन में व्याप्ति का सिद्धांत कहता है कि यदि कोई निष्कर्ष सार्वभौमिक है, तो उसे हर परिस्थिति में लागू होना चाहिए। लेकिन यहाँ ”शिर्क” (बहुदेववाद) को बिना किसी तार्किक कारण के सबसे बड़ा गुनाह कहा गया है।

3. **उदाहरण (Example):**
   वैदिक दर्शन बहुदेववाद को स्वीकार करता है और कहता है कि विभिन्न देवता एक ही ब्रह्म के विभिन्न रूप हैं। यदि बहुदेववाद स्वाभाविक रूप से गलत होता, तो यह सभी समाजों में अस्वीकार्य होना चाहिए था, लेकिन संपूर्ण भारतीय परंपरा इसे स्वीकार करती है।

4. **उपनय (Application):**
   केवल एक ईश्वर की पूजा को अनिवार्य बताने का कोई तार्किक आधार नहीं दिया गया है। बहुदेववाद के खिलाफ निष्कर्ष बिना किसी सार्वभौमिक व्याप्ति के दिया गया है।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत न्याय दर्शन के व्याप्ति सिद्धांत को अस्वीकार करती है क्योंकि यह बिना प्रमाण के बहुदेववाद को गलत ठहराती है।

सारणी: आयतों का तार्किक मूल्यांकन

आयत	चुना गया	मुख्य आलोचना

संख्या	तत्व	
11	प्रमाण	बिना किसी प्रत्यक्ष प्रमाण के दावा किया गया है कि केवल अल्लाह ही सृष्टि का निर्माता है।
12	अनुमान	बिना किसी तार्किक व्याप्ति के, केवल ईश्वर का आभार प्रकट करने को ही लाभकारी बताया गया है।
13	व्याप्ति	बिना सार्वभौमिक आधार के बहुदेववाद को सबसे बड़ा गुनाह बताया गया है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तार्किक त्रुटियाँ, अनिश्चित प्रमाण, और पक्षपातपूर्ण निष्कर्ष पाए गए। न्याय दर्शन के अनुसार, बिना प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान या व्याप्ति के कोई भी निष्कर्ष वैध नहीं होता। अतः ये आयतें न्यायशास्त्र की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं।

न्याय दर्शन के आधार पर आयतों का तार्किक विश्लेषण एवं आलोचना

आयत 16: "(उस वक़्त उसका अन्जाम) बता दूँगा ऐ बेटा इसमें शक नहीं कि वह अमल (अच्छा हो या बुरा) अगर राई के बराबर भी हो और फिर वह किसी सख़्त पत्थर के अन्दर या आसमान में या ज़मीन मे (छुपा हुआ) हो तो भी ख़ुदा उसे (क़यामत के दिन) हाज़िर कर देगा बेशक ख़ुदा बड़ा बारीकबीन वाक़िफकार है।"

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana - Inference)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि अल्लाह हर छोटे से छोटे कर्म को भी जानता है और क़यामत के दिन उसे सामने लाएगा।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी अनुमान को स्वीकार करने के लिए उसके पीछे एक ठोस प्रमाण होना चाहिए। यहाँ क़यामत (अंतिम दिन) की अवधारणा प्रस्तुत की गई है, लेकिन इसके अस्तित्व का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण (प्रत्यक्ष प्रमाण - Pratyaksha Pramana) नहीं दिया गया।

3. **उदाहरण (Example):**
   भगवद गीता (4.17) में कहा गया है कि कर्म को समझना अत्यंत जटिल है, और यह केवल बाह्य निरीक्षण से नहीं जाना जा सकता। गीता में कर्म के तीन प्रकार बताए गए हैं–सत्व, रजस, और तमस –लेकिन किसी दैवी शक्ति द्वारा अंतिम दिन कर्मों का लेखा-जोखा रखने की बात नहीं कही गई है।

4. **उपनय (Application):**
   यदि किसी भी कर्म का परिणाम केवल क़यामत के दिन ही मिलेगा, तो यह कर्म सिद्धांत (Karma Siddhanta) के विरुद्ध है, जो यह कहता है कि व्यक्ति को उसी जन्म या पुनर्जन्म में अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत न्याय दर्शन के अनुमान प्रमाण की कसौटी पर खरी नहीं उतरती, क्योंकि यह बिना किसी प्रमाण के क़यामत और अंतिम निर्णय की अवधारणा को प्रस्तुत करती है।

आयत 17: "ऐ बेटा नमाज़ पाबन्दी से पढ़ा कर और (लोगों से) अच्छा काम करने को कहो और बुरे काम से रोको और जो मुसीबत तुम पर पड़े उस पर सब्र करो (क्योंकि) बेशक ये बड़ी हिम्मत का काम है।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Upamana - Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   इस आयत में कहा गया है कि नमाज़ पढ़ना, अच्छाई का प्रचार करना और बुराई से रोकना एक महान कार्य है।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन के अनुसार, उपमान प्रमाण (तुलना) का उपयोग करके किसी सिद्धांत की पुष्टि की जाती है। लेकिन यहाँ नमाज़ को एक सर्वोत्तम कर्म बताया गया है, जबकि इसकी तुलना किसी अन्य धार्मिक साधना से नहीं की गई है।

3. **उदाहरण (Example):**
   पतंजलि योग सूत्र (1.2) में कहा गया है: "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" अर्थात मन की चित्त वृत्तियों को रोकना ही योग है। भारतीय दर्शन में ध्यान, योग और तप को उच्च साधन माना गया है, जबकि केवल एक विशिष्ट प्रार्थना (नमाज़) को उच्चतम साधना कहना पक्षपातपूर्ण है।

4. **उपनय (Application):**
   यदि केवल नमाज़ ही श्रेष्ठ कर्म है, तो अन्य ध्यान और साधनाएँ क्यों नहीं? यह न्याय दर्शन के उपमान सिद्धांत का उल्लंघन करता है, क्योंकि किसी भी निष्कर्ष को किसी अन्य समान उदाहरण से प्रमाणित किया जाना चाहिए।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत केवल इस्लामिक पद्धति को श्रेष्ठ मानती है और अन्य धर्मों के ध्यान, योग और कर्मकांडों की तुलना किए बिना निष्कर्ष निकालती है, जो कि तार्किक रूप से अधूरा है।

आयत 18: "और लोगों के सामने (ग़ुरुर से) अपना मुँह न फुलाना और ज़मीन पर अकड़कर न चलना क्योंकि ख़ुदा किसी अकड़ने वाले और इतराने वाले को दोस्त नहीं रखता और अपनी चाल ढाल में मियाना रवी एख़्तेयार करो।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti - Universal Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि घमंड न करना और संतुलित व्यवहार रखना आवश्यक है।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन में व्याप्ति का अर्थ है कि यदि कोई सिद्धांत सार्वभौमिक है, तो वह सभी परिस्थितियों में

लागू होना चाहिए। यहाँ कहा गया है कि अल्लाह घमंड करने वालों को पसंद नहीं करता, लेकिन यह सार्वभौमिक सत्य नहीं है क्योंकि कई धार्मिक ग्रंथों में ईश्वर को "सर्वशक्तिमान" और "स्वयंभू" कहा गया है, जो खुद में एक प्रकार का सर्वोच्चता का दावा है।

3. **उदाहरण (Example):**
   भगवद गीता (16.4-5) में अहंकार को आसुरी गुण कहा गया है, लेकिन यह भी स्पष्ट किया गया है कि व्यक्ति के आचरण और ज्ञान से ही उसका वास्तविक स्वरूप परिभाषित होता है, न कि केवल बाह्य विनम्रता से।

4. **उपनय (Application):**
   यदि घमंड बुरा है, तो धर्मग्रंथों में कई जगह अल्लाह को सर्वशक्तिमान और सभी से श्रेष्ठ क्यों बताया गया है? यह एक विरोधाभास उत्पन्न करता है।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं है कि हर घमंड बुरा होता है। आत्मगौरव और आत्मबल कई बार आवश्यक भी होता है।

आयत 19-20: "और दूसरो से बोलने में अपनी आवाज़ धीमी रखो क्योंकि आवाज़ों में तो सब से बुरी आवाज़ (चीख़ने की वजह से) गधों की है।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Upamana - Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   इस आयत में कहा गया है कि आवाज़ धीमी रखनी चाहिए, क्योंकि ऊँची आवाज़ गधे जैसी होती है।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन में तुलना (उपमान) तभी स्वीकार्य होती है जब वह तार्किक और उपयुक्त हो। लेकिन यहाँ मनुष्यों की आवाज़ की तुलना गधों से की गई है, जो एक असंगत तुलना है।

3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय ग्रंथों में वाणी को मधुर, स्पष्ट और अर्थपूर्ण रखने की बात कही गई है, लेकिन इसकी तुलना

किसी पशु से नहीं की गई है।

4. **उपनय (Application):**
 यदि ऊँची आवाज़ गधे जैसी है, तो क्या हर ज़ोर से बोलने वाला व्यक्ति गधे जैसा होगा? यह तर्क अवैज्ञानिक और अपमानजनक है।

5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय दर्शन के उपमान प्रमाण की कसौटी पर खरी नहीं उतरती, क्योंकि यह असंगत और अतार्किक तुलना प्रस्तुत करती है।

सारणी: आयतों का तार्किक मूल्यांकन

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
16	**अनुमान**	**क़यामत और अंतिम निर्णय का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं दिया गया।**
17	**उपमान**	**नमाज़ को सर्वोत्तम साधना कहने का कोई तुलनात्मक प्रमाण नहीं दिया गया।**
18	**व्याप्ति**	**अहंकार हमेशा बुरा नहीं होता, यह संदर्भ पर निर्भर करता है।**
19-20	**उपमान**	**मनुष्य की आवाज़ की तुलना गधे से करना अवैज्ञानिक और अनुचित है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तार्किक त्रुटियाँ, असंगत तुलनाएँ और अनुचित निष्कर्ष पाए गए, जो न्याय दर्शन की कसौटी पर असफल सिद्ध होते हैं।

न्याय दर्शन के आधार पर आयतों का तार्किक विश्लेषण एवं आलोचना

आयत 21: "और जब उनसे कहा जाता है कि जो (किताब) ख़ुदा ने नाज़िल की है उसकी पैरवी करो तो (छूटते ही) कहते हैं कि नहीं, हम तो उसी (तरीक़े से चलेंगे) जिस पर हमने अपने बाप-दादाओं को पाया। भला अगर ये शैतान उनके बाप-दादाओं को जहन्नुम के अज़ाब की तरफ बुलाता रहा हो (तो भी उन्हीं की पैरवी करेंगे)?"

चुना गया न्याय तत्व: तर्कदोष (Hetvabhasa - Fallacy of Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि जो लोग अपने पूर्वजों की परंपराओं का अनुसरण करते हैं, वे गलत हो सकते हैं, क्योंकि उनके पूर्वज भी शैतान द्वारा गुमराह किए जा सकते थे।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन में हेत्वाभास (तर्कदोष) का एक प्रकार असिद्ध (Asiddha - Invalid Premise) है, जिसमें यह मान लिया जाता है कि पूर्वजों का अनुसरण करना हमेशा गलत होता है। यह बिना किसी प्रमाण के एक निष्कर्ष निकालने की गलती है।

3. **उदाहरण (Example):**
   मनुस्मृति (2.6) कहती है कि पूर्वजों द्वारा दिए गए धर्म और नीति के मार्ग का अनुसरण करना आवश्यक है, जब तक वह तर्कसंगत हो।

   "वेद, स्मृति, आचार और स्वयं की तर्कशक्ति – यही धर्म के चार प्रमाण हैं।"

   इस्लाम में स्वयं यह दावा किया जाता है कि मोहम्मद के पूर्वज (इब्राहीम आदि) सच्चे धर्म पर थे। यदि पूर्वजों का अनुसरण गलत होता, तो फिर मोहम्मद का भी पूर्वजों से मिला ज्ञान संदिग्ध हो सकता था।

4. **उपनय (Application):**
   यदि इस तर्क को स्वीकार किया जाए कि पूर्वजों का अनुसरण गलत है, तो इस्लामिक परंपराओं का पालन भी गलत हो सकता है, क्योंकि वह भी एक ऐतिहासिक परंपरा पर आधारित है।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत एक हेत्वाभास (Logical Fallacy) को जन्म देती है, क्योंकि यह बिना उचित प्रमाण के यह मान लेती है कि पूर्वजों की परंपराएँ गलत ही होती हैं।

आयत 22: "और जो शख़्स ख़ुदा के आगे अपना सर (तस्लीम) ख़म करे और वह नेकोकार (भी) हो तो बेशक उसने (ईमान की) मज़बूत रस्सी पकड़ ली और (आख़िर तो) सब कामों का अन्जाम ख़ुदा ही की तरफ है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti - Universal Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि जो अल्लाह के आगे सिर झुका दे, वही सच्चे ईमान वाला है।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन के अनुसार, व्याप्ति (Vyapti - Invariable Concomitance) का अर्थ है कि यदि कोई नियम सार्वभौमिक है, तो वह हर स्थिति में लागू होना चाहिए।
   यहाँ कहा गया है कि अल्लाह की अधीनता ही सच्चा ईमान है। लेकिन यह सार्वभौमिक नहीं हो सकता, क्योंकि अन्य धर्मों में भी भक्ति और सत्य की अलग-अलग परिभाषाएँ हैं।

3. **उदाहरण (Example):**
   भगवद गीता (9.23) कहती है:

   "जो भी भक्त श्रद्धा से किसी देवता की पूजा करता है, वह वास्तव में मेरी ही पूजा करता है, लेकिन अविधिपूर्वक।"

   यहाँ भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि भक्ति के कई रूप हैं, और सत्य के प्रति समर्पण विभिन्न रूपों में हो सकता है। लेकिन कुरआन की यह आयत केवल एक ही प्रकार के समर्पण को स्वीकार करती है, जो

न्याय दर्शन के व्याप्ति सिद्धांत का उल्लंघन है।

4. **उपनय (Application):**
   यदि सत्य को जानने के कई मार्ग हो सकते हैं, तो केवल एक ही मार्ग को "मजबूत रस्सी" कहना तार्किक रूप से गलत है।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत व्याप्ति सिद्धांत की दृष्टि से त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि यह बिना किसी तुलनात्मक विश्लेषण के केवल एक विचारधारा को सत्य घोषित कर देती है।

**आयत 23-24: "और (ऐ रसूल) जो काफिर बन बैठे तो तुम उसके कुफ्र से कुढ़ों नही। उन सबको तो हमारी तरफ लौट कर आना है, तो जो कुछ उन लोगों ने किया है (उसका नतीजा) हम बता देगें। बेशक ख़ुदा दिलों के राज़ से (भी) खूब वाकिफ़ है।

हम उन्हें चन्द रोज़ों तक चैन करने देगें फिर उन्हें मजबूर करके सख़्त अज़ाब की तरफ खीच लाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana - Inference)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि जो लोग अल्लाह को नहीं मानते, वे अंततः सख्त अज़ाब (यातना) में डाले जाएँगे।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन में अनुमान (Anumana) तभी मान्य होता है जब उसके लिए कोई तार्किक कारण हो। यहाँ "काफिरों को सज़ा" का सिद्धांत बिना किसी प्रत्यक्ष प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है।

3. **उदाहरण (Example):**
   योग वशिष्ठ (2.3.14) कहता है:

"ज्ञान और सत्य की प्राप्ति किसी भी बाध्यता से नहीं होती, बल्कि यह व्यक्ति के विवेक और

आत्मचिंतन से होती है।"

भारतीय दार्शनिक परंपराएँ कहती हैं कि सत्य को जानने के लिए किसी भी चीज़ को बलपूर्वक स्वीकार करवाना आवश्यक नहीं है।

4. **उपनय (Application):**
   यदि कोई दैवी शक्ति केवल दंड के भय से पूजा जाए, तो वह वास्तविक भक्ति नहीं होगी। यह न्याय दर्शन के अनुमान प्रमाण के विपरीत है, जिसमें सत्य को तर्क और अनुभव से प्राप्त करना आवश्यक बताया गया है।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत न्याय दर्शन के अनुमान प्रमाण की दृष्टि से त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि यह बिना किसी ठोस प्रमाण के एक भयपूर्ण निष्कर्ष निकालती है।

सारणी: आयतों का तार्किक मूल्यांकन

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
21	तर्कदोष (हेत्वाभास)	पूर्वजों का अनुसरण गलत मानने का कोई प्रमाण नहीं दिया गया।
22	व्याप्ति	केवल एक मार्ग को सत्य मानना सार्वभौमिक सत्य नहीं हो सकता।
23-24	अनुमान	बिना प्रमाण के यह मान लेना कि काफिरों को यातना दी जाएगी, तर्कहीन है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तर्क की त्रुटियाँ पाई गई हैं। न्याय दर्शन के आधार पर देखा जाए तो:

1. पूर्वजों की परंपराओं को बिना प्रमाण गलत ठहराना एक तर्कदोष (Logical Fallacy) है।

2. केवल एक प्रकार की भक्ति को सत्य घोषित करना व्याप्ति सिद्धांत के विरुद्ध है।
3. ईश्वर द्वारा जबरन दंड देने का तर्क अनुमान प्रमाण की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।

इसलिए, यह आयतें न्याय दर्शन की कसौटी पर तार्किक रूप से कमजोर साबित होती हैं।

न्याय दर्शन के आधार पर आयतों का तार्किक विश्लेषण एवं आलोचना

आयत 26: *"जो कुछ सारे आसमान और ज़मीन में है (सब) ख़ुदा ही का है, बेशक ख़ुदा तो (हर चीज़ से) बेपरवा (और बहरहाल) क़ाबिले हम्दो सना है।"*

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana - Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि जो कुछ भी आकाश और पृथ्वी में है, वह सब अल्लाह का है।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन में प्रमाण (Pramana) का महत्व है। कोई भी सत्य कथन तब तक मान्य नहीं होता जब तक वह प्रत्यक्ष (Pratyaksha), अनुमान (Anumana), उपमान (Upamana), या शब्द (Shabda) प्रमाण से सिद्ध न हो।

   - इस आयत में अल्लाह के स्वामित्व का कोई तार्किक प्रमाण नहीं दिया गया है, केवल एक कथन किया गया है।
3. **उदाहरण (Example):**
   वैशेषिक दर्शन के अनुसार, किसी भी तत्व का स्वामी वही हो सकता है जो उसे उत्पन्न या नियंत्रित करता हो।

   - यदि अल्लाह के स्वामित्व का दावा किया जा रहा है, तो यह सिद्ध करने के लिए तार्किक प्रमाण आवश्यक है।
   - भगवद गीता (9.4) कहती है:

     "मुझमें यह सम्पूर्ण जगत व्याप्त है, परंतु मैं उनमें स्थित नहीं हूँ।"

        - यहाँ ब्रह्मांड की स्थिति स्पष्ट रूप से बताई गई है, न कि केवल दावा किया गया है।

4. **उपनय (Application):**
   इस्लाम में ईश्वर के स्वामित्व को मानने की बाध्यता है, लेकिन न्याय दर्शन में किसी भी सत्य को केवल कथन के आधार पर नहीं स्वीकार किया जाता।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना किसी तार्किक प्रमाण के एक निष्कर्ष प्रस्तुत करती है।

आयत 27: "और जितने दरख़्त ज़मीन में हैं सब के सब क़लम बन जाएँ और समन्दर उसकी सियाही बनें, और उसके (ख़त्म होने के) बाद और सात समन्दर (सियाही हो जाएँ) और ख़ुदा का इल्म और उसकी बातें लिखी जाएँ, तो भी ख़ुदा की बातें ख़त्म न होगीं। बेशक ख़ुदा सब पर ग़ालिब (और) दाना (बीना) है।"

□□□□ □□□ □□□□□ □□□□: □□□□□□□□□□ □□□ (Arthāpatti - Postulation or Presumption)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि अल्लाह के ज्ञान और वाणी को लिखने के लिए यदि संपूर्ण पृथ्वी के वृक्षों को क़लम और समुद्र को स्याही बना दिया जाए, तब भी वे समाप्त नहीं होंगे।

2. **हेतु (Reason):**
   न्याय दर्शन में □□□□□□□□□□ □□□ **(Arthāpatti - Overstatement)** एक तर्कदोष है, जिसमें किसी बात को अनावश्यक रूप से बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है।

   - इस आयत में कोई तार्किक प्रमाण नहीं दिया गया है कि अल्लाह के ज्ञान को लिखना असंभव होगा।
   - यह केवल एक काव्यात्मक कथन है, जो दार्शनिक सत्य नहीं सिद्ध करता।

3. **उदाहरण (Example):**
 योग वशिष्ठ (1.3.6) कहता है:

 "सत्य को अनुभव और बुद्धि से परखा जाना चाहिए, न कि मात्र चमत्कारों और बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बातों से।"

4. **उपनय (Application):**
 यदि इस तर्क को सही मान लिया जाए, तो फिर यह कैसे सिद्ध किया जाए कि अन्य धर्मों के ईश्वर का ज्ञान सीमित है?
   - **हिंदू ग्रंथों में भी ब्रह्म का ज्ञान असीम बताया गया है, लेकिन इसे तार्किक और व्याख्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है, अतिशयोक्ति के रूप में नहीं।**
5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय दर्शन के तर्कसंगत ज्ञान सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह एक अतिशयोक्तिपूर्ण दावा करती है, जिसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 28: "तुम सबका पैदा करना और फिर (मरने के बाद) जिला उठाना एक शख़्स के (पैदा करने और जिला उठाने के) बराबर है। बेशक ख़ुदा (तुम सब की) सुनता और सब कुछ देख रहा है।"

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana - Inference)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत कहती है कि मनुष्यों को दोबारा जीवित करना उतना ही आसान है, जितना उन्हें पहली बार पैदा करना।

2. **हेतु (Reason):**
 न्याय दर्शन में अनुमान (Anumana) का प्रयोग तभी किया जाता है जब उसके लिए कोई ठोस तर्क

हो।

- ○ **पुनर्जन्म और पुनर्जीवन को प्रमाणित करने के लिए कोई तार्किक तर्क या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं दिया गया।**

3. **उदाहरण (Example):**
   - ○ **सांख्य दर्शन कहता है कि सृष्टि प्रकृति और पुरुष के संतुलन से चलती है, और आत्मा अमर होती है, लेकिन शरीर को पुनः जीवित करने का सिद्धांत कारण-कार्य संबंध (Cause-Effect Relationship) के आधार पर सिद्ध नहीं होता।**
   - ○ **भगवद गीता (2.22) कहती है:**

     "जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नए धारण करता है, वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को छोड़कर नया प्राप्त करती है।"

   - ○ **यहाँ पुनर्जन्म का तर्क स्वाभाविक रूप से दिया गया है, न कि केवल एक दावा किया गया है।**
4. **उपनय (Application):**
   यदि इस आयत को सही माना जाए, तो इसकी तुलना अन्य धर्मों की पुनर्जन्म अवधारणाओं से करनी होगी।
   - ○ **लेकिन कुरआन पुनर्जन्म की बजाय केवल एक पुनर्जीवन (Resurrection) की बात करता है, जो अन्य दर्शनों के तर्कसंगत सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।**
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत न्याय दर्शन के अनुमान प्रमाण की कसौटी पर खरा नहीं उतरती, क्योंकि इसमें केवल एक दावा किया गया है, जिसे अनुभवजन्य (Empirical) प्रमाण से सत्यापित नहीं किया जा सकता।

सारणी: आयतों का तार्किक मूल्यांकन

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	प्रमाण	बिना तार्किक प्रमाण के अल्लाह के स्वामित्व का दावा किया गया।

27	**अतिशयोक्ति दोष**	**ज्ञान की असीमता का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया गया, जिसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
28	**अनुमान**	**पुनर्जीवन की प्रक्रिया को बिना किसी तार्किक प्रमाण के सत्य घोषित किया गया।**

समग्र निष्कर्षः

1. **स्वामित्व का दावा बिना प्रमाण के किया गया है।**
2. **ज्ञान की अनंतता के संदर्भ में अतिशयोक्ति का प्रयोग किया गया है।**
3. **पुनर्जीवन का सिद्धांत बिना किसी तार्किक आधार के प्रस्तुत किया गया है।**

इसलिए, न्याय दर्शन के सिद्धांतों के आधार पर यह आयतें तर्कसंगत नहीं ठहरतीं।